षष्टम अध्याय

हिन्दी कहानियों में चित्रित महानगरों की जीवनशैली

* **प्रस्तावना**

6.1 महानगर का स्वरूप और उसके प्रमुख कारण

(6.1.1) व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थापना

(6.1.2) शिक्षा का माध्यम

(6.1.3) रोज़गार की तलाश में स्थानान्तरण

(6.1.4) विदेशी संस्कृति का असर

(6.1.5) राजनीति एवं सरकारी कार्यालय का केन्द्र

(6.1.6) महानगरों की सुविधाओं का आकर्षण

(6.1.7) यातायात के साधनों का विकास

(6.1.8) औधोगीकरण

6.2 हिन्दी कहानी में नारी चित्रित महानगरीय जीवनशैली

(6.2.1) बेरोज़गारी और आर्थिक संकट

(6.2.2) निम्नस्तरीय जीवन शैली

(6.2.3) मूल्यों का विघटन

(6.2.4) आर्थिक एवं शारीरिक शोषण

(6.2.5) आवास की समस्या वाली जीवन शैली

(6.2.6) स्त्री-पुरुष के संबंधों में बदलाव

(6.2.7) तनाव, कुण्ठा एवं धुटन भरा जीवन

(6.2.8) एकाकीपन एवं अकेलापन की जीवन शैली

(6.2.9) संयुक्त परिवारों का विस्छेदन

(6.2.10) यांत्रिक जीवन शैली

6.3 महीप सिंह की कहानियों में नारी की महानगरीय जीवन शैली

* **निष्कर्ष**

* **संदर्भ ग्रंथ-सूची**

षष्टम अध्याय

हिन्दी कहानियों में चित्रित महानगरों की जीवनशैली

*** प्रस्तावना**

महीप सिंह ने अपनी कहानियों के संदर्भ की खोज अपने आस-पास के परिवेश में ही की है। वह जिस परिवेश में रहे है उसी को अपनी कहानियों का आधार बनाया है। वह अपनी जिन्दगी मुंबई, दिल्ली जैसे महानगरों में बिताई है। इसलिए उन्होंने अपने नगरीय परिवेश से बाहर कहानी के कथ्य की तलाश ही नही की है। महानगरीय जिन्दगी के विभिन्न कोणों को नये संदर्भ में रजूआत किया है। महानगरीय परिवेश के चलते कहानियों के नारी पात्रों की जीवनचर्चा में अकेलापन, संघर्ष,द्वन्द्व, संत्रास, ऊब, मूल्यहास दिखाई देता है। **"**ये चरित्र ऐसे जन के प्रतिनिधि है जो महानगरीय संस्कृति के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक शोषण से यस्त है। ये लोग महानगर का निर्मल चक्र पूरा कर रहे हैं। इनके लिए सिर्फ एक ही बात रह जाती है, वह यह की महानगरीय अभिशायों को ढोते चले जाएँ। हो सकता है इस ढोने में कभी कोई ऐसी सच्चाई उजागर हो जाए जो अमानवीय करण की प्रक्रिया को क्षण भर के लिए थमा दे।**"1**

महानगरीय जीवन की व्यस्तता के कारण नारी को स्वार्थी व अमानवीय बना दिया है तथा आत्मीय रिश्तों के बीच अलगाव पैदा कर दिया है तथा सभी मानवीय संबंधों का अध्ययन करने के बाद सामने आता है कि नारी निर्धारण की धुरी सामाजिक नैतिक नियमों की परिधि से निकलकर आर्थिक घरातल पर टिक गई है। महीप सिंह ने नारी की आधुनिक जीवन की घुटन और एकरसता भरी जिन्दगी को अनेक कोणों से देखा है और बिना किसी दुराव के उन्हें अपनी कहानियों में दर्शाया है।

महानगर शब्द "'महा' और 'नगर' इन दो शब्दों के योग से बनता है। महा का अर्थ बड़ा और नगर का अर्थ है गाँव या कस्बे आदि से बड़ी मानव की वह बस्ती जिसमें अनेक जातियों और अलग-अलग पेशों के लोग रहते है।"**2** हमारे देश में दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास जैसे शहर महानगर में आते है। डॉ.सीमा गुप्ता ने महानगर की परिभाषा देते हुए कहाँ कि - "वे नगर जो अपने विकास के द्वारा राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पूर्ण रुप से प्रभाव स्थापित कर लेते हैं, महानगर की संज्ञा से अभिहित किये जाते है।"**3** महानगर में जीवन में बेरोज़गारी, आवास समस्या, भीड़, महँगाई, गंदगी, भ्रष्टाचार, प्रदूषण, आधुनिकता एवं पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव आदि समस्याओं से शहरों के मानवी का जीवन संघर्ष से भरा होता है साथ ही अनेक पारिवारिक समस्याओं के चलते शहरी मनुष्य तनाव से ग्रस्त रहता है।

6.1 महानगर का स्वरूप और उसके प्रमुख कारण

महानगर का स्वरूप

अलग-अलग जातियों और संस्कृतियों का मिलन क्षेत्र भारतीय महानगर बनता है। सभ्यता और संस्कृति के बनते-बिगड़ते एवं टूटते स्वरूप यहाँ की विशेषताएँ है। गाँव, नगर, महानगर अब पास-पास हो गये है, जिससे इनके बीच की दूरियाँ अब कम होने लगी है। ऊपर से शहर में औधोगीकरण ने नगरीकरण की प्रकिया को बढ़ावा देकर नगरों के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक ढाँचे का आमूल बदल दिया है। स्वतंत्रता के बाद भारत में महानगर की प्रकिया में निरंतर बढ़ोती आयी है। इस बढ़ोती के कारण नगरों का महानगरों में रुपान्तर बड़ी तेजी से हुआ है। इसके कारण नगरों और महानगरों में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। जनसंख्या के साथ वहाँ की समस्याएँ भी बढ़ रही है। "आधुनिक

समाज शब्द ही एक ऐसे जीवन के ढंग को संकेतित करता है, जो तर्कयुक्त औद्योगिक संरचना जटिल व्यापार-मण्डियों तीव्र यातायात और कुशल संरचना से विशेषित है।"**4**

भारत के नगर और महानगरों में जिस भोगवादी जीवन प्रणाली और गतिविधियों का विकास हुआ है इसमें बड़ी संख्या में ग्रामीण लोग उसके प्रति आकर्षण हुए है। सांप्रत समय में विश्व के सभी भागों में बड़ी मात्रा में ग्रामीण जन महानगरीय जीवन से आकर्षित होकर उसकी तरफ उन्नमुख हुए है और हो रहे है। परिणामस्वरूप महानगरीय की गति उतरोतर तीव्र से तीव्रतर होती जा रही है। महानगरों का तथाकथित आधुनिक और प्रगतिशील वातावरण अपनी ऊपरी चमक -दमक से हमें भले ही आकर्षित क्यों न करे किन्तु भीतर ही भीतर उसने झूठ, फरेब, शोषण, भ्रष्टाचार एवं अन्याय की ऐसी दीवार खड़ी कर दी है कि जिसमें हमारे मूल्य और विश्वास का दम घुट गया है।

बर्गल नगरीकरण को स्पष्ट करते हुए कहते है की - "जिस प्रक्रिया के द्वारा ग्राम में परिवर्तित होते हैं, उसे नगरीकरण कहना चाहिए। नगरीकरण की प्रक्रिया सामाजिक संरचना पर प्रगाढ़-प्रभाव डालती है। कृषि मूलक जनसंख्या न्यून हो जाती है उसकी तुलना में नगरीय जनसंख्या में वृद्धि होती है।"**5**

जी.एस.धुर्य के अनुसार "नगरीकरण का तात्पर्य गाँव से लोगों का शहरों में आना तथा उनके आने से शहर में आने वाले अनेक परिवारों पर पड़ने वाले प्रभावों से है। अतःनगरीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें गाँवों से शहरों में आने पर लोगों के मूल्यों, दृष्टिकोण एवं जीवन पघ्घति में परिवर्तन होता है।"**6**

गाँव से नगर और नगरों से महानगरों की प्रक्रिया वर्तमान युग में सभी देशों में बड़ी तेजी से बढ़ती जा रही है। नगरों में अधिक सुविधाएँ जैसे नौकरी के अवसर, स्वास्थ्य एवं शिक्षा की व्यापक सुविधा, उच्च जीवन स्तर आदि के विरुद्ध ग्रामीण क्षेत्रों में अपेक्षाकृत साधनों का अभाव, बेरोज़गारी, कृषि के प्रति अरुचि रुढ मान्यताएँ आदि के कारण लोग नगर तरफ अधिक आने लगे है। इसके कारण नगरों की जनसंख्या विस्फोट बनकर महानगरों को जन्म दे रहे है।

विकास का क्रम यह कहता है की व्यक्ति निरन्तर छोटे समुदाय से बड़े समुदाय में प्रवेश करता है। विकास की इस प्रकिया ने ही नगर और महानगरीय समुदाय की स्थापना की है। वस्तुतः नगरीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत एक ग्रामीण क्षेत्र ही उत्तरोत्तर रुप से क्रमशः क़स्बा,नगर और महानगर में परिवर्तित हो जाता है। जब किसी बड़े ग्रामीण क्षेत्र में जनसंख्या स्थायी रुप से रहने लगती है और इस क्षेत्र में शिक्षा, उद्योग, धर्म, व्यापार, राजनीति आदि गतिविधियों में तीव्रता आने लगती है तो इस क्षेत्र को क़स्बा कहां जाता है। क़स्बा अपनी विकास प्रकिया में नगर का रुप धारण कर लेता है। नगर निर्माण के लिए पहले से अधिक जनसंख्या और पचहत्तर प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आघृत न होकर गैर कृषि गतिविधियों से सम्बन्धित होनी आवश्यक है। प्रशासन संम्बधी कामकाज चलाने के लिए सरकारी कार्यालय, शिक्षण संस्थाएँ, अस्पताल, कारखाने, यातायात के साधन, मनोरंजन स्थल, बड़े बाजार आदि होना चाहिए, जिससे वह अपने आस-पास के कस्बों पर आधिपत्य रख सके और आने वाले समय में महानगर का रुप धारण कर सके।

जो नगर अपने क्रमिक विकास द्वारा राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पूर्ण रुप से प्रभाव स्थापित कर लेते है 'महानगर' की कोटि में समाविष्ट हो जाएगा। सीमा गुप्ता के अनुसार कहां जाए तो "महानगर के

प्रत्यय का शब्द अंग्रेजी के 'मेटोयोलिटन' का पर्याय है। ग्रीक में 'मेंटों 'और' पोलिस' शब्द का अर्थ क्रमशः माता और नगर है। ग्रीक के लगभग सभी प्राचीन नगर इसी मातृ-भावना पर आधारित थे। कालांतर में उच्च राष्ट्रीयता के विकास के पश्चात् इन नगरों में अनेक विशेषताओं का विकास हुआ। वर्तमान में दस लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों की गिनती महानगरों के अन्तर्गत की जाती है।**"7**

महानगर के प्रमुख कारण

प्रत्येक युग में अपने विकास के बीज पड़े होते है, जो समयान्तर श्रेष्ठ सुविधा के परिणामस्वरूप विकसित होते है। वह पुराना छोड़कर निरंतर विकास के साथ कुछ नया जोड़ता है। हम पूरे विश्वास के साथ कह सकते है की वर्तमान समय में जो नये नगर एवं महानगर अस्तित्व में आ रहे हैं उनके कारण हम आपको बताते है।

(6.1.1) व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थापना

जनजीवन को सरल से चलाने के लिए आवश्यक चीजों का मिलना जरूरी है। यह तभी संभव है जब मानव बस्ती के आस-पास उनकी जीवन ज़रुरी वस्तु की बिक्री हेतु व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थापना की जाऐ। एक समाजशास्त्री सिस्म ने व्यापार के महत्व को दर्शाते हुए कहा कि - **"**व्यापार नगर के अस्तित्व के लिए उतना हीं आवश्यक है जितना एक प्राणी के लिए रक्त का परिचालन होता है।**"8** हम हमारे भारत देश में भी देख सकते है की गोवा, सुरत, कोलकता आदि नगरों में व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थापना के कारण उनका नगर से महानगर बनने की गति में बहोत तीव्रता आ गई है।

(6.1.2) शिक्षा का महत्व

प्राचीन काल में हिंदुस्तान में तक्षशिला, नालंदा जैसी उच्च शिक्षा के केन्द्र के कारण इन नगरों का विकास हुआ था। वाराणसी या काशी भी शिक्षा का केन्द्र माना जाता था। उस समय दूर-दूर से लोग अच्छी शिक्षा प्राप्त करने हेतु यहाँ आते थे। गाँव की तुलना में महानगरों में शिक्षा की सुविधाएँ अधिक है जिनके कारण ग्रामवासी नगरों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। वर्तमान समय में भी अच्छी स्कूली संस्थाओं तथा उच्च शैक्षणिक संस्थाओं के कारण अनेक नगरों एवं महानगरों का विकास हुआ है और हो रहा है।

(6.1.3) रोज़गार की तलाश में स्थानान्तरण

नगरों एवं महानगरों में रोज़गार के अवसर ज्यादा होते है। हर व्यक्ति को अपनी क्षमता के मुताबिक रोज़गार मिल जाता है। महानगरों में उघोग-धंधे, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं में काम करने के उदेश्य से अनेक ग्रामीण जन नगरों की तरफ प्रयाण करते है। शिक्षा के व्याप के कारण शिक्षित व्यक्तियों की संख्या मे बढ़ोतरी होती है। ऐसे पेढे-लिखे नवयुवान अपने परंपरागत कृषि के व्यवसाय को छोड़कर महानगरों में रोज़गार की तलाश में आ पहुँचते है। इनके साथ उनके माँ-बाप भी शहर आ जाते है।

(6.1.4) विदेशी संस्कृति का असर

विदेशी संस्कृति का सबसे ज्यादा असर महानगर में देखने को मिलता है। वास्तव में देखा जाये तो विदेशी संस्कृति की असर भारत में अंग्रेज़ों के शासनकाल से माना जाता है। अंग्रेज़ों द्वारा उपलब्ध सुविधा का अधिक लाभ नगरों को मिला है। नगर व्यापार वाणिज्य और नौकरियों का केन्द्र बन गया। यह विकास कालांतर बढ़ता गया और आज

विदेशी सभ्यता की असर पूरे मानव समाज पर देखने को मिलती है। विदेशी संस्कृति से नगर और महानगर अधिक प्रभावित हुए है। इस प्रभाव से हमारी परंपरागत जीवन शैली भिन्न एक अलग नवीन सभ्यता का जन्म हुआ है।

आज हम यूरोपीय संस्कृति से आकर्षित होकर अपने आपको आधुनिक सिद्ध करने में गौरवन्विंत महसूस करते है। विदेशी सभ्यता ने महानगरीय जीवन शैली को जैसे खान-पान, वेषभूषा, तौर-तरीके आदि को पूरी तरह बदल दिया। पुरुष अपने परिवार के साथ मांसाहार करने लगा और घर की नारी पर पुरुषों के साथ रात बिताने लगी है। इस तरह महानगर पूरी तरह विदेशी संस्कृति के केन्द्र बनता जा रहे है।

(6.1.5) राजनीति एवं सरकारी कार्यालय का केन्द्र

हमारे देश में विधायक, मंत्री, सांसद पक्ष, विपक्ष के नेता आदि अपने चुनाव-क्षेत्र को छोड़ महानगरों में रहने के लिए चले जाते है। नगर में ही अपना मुख्यालय खुलवा लेते हैं, जिससे उनके पार्टी के लोग का तथा कार्यकरों का आना -जाना शुरू हो जाता है। अत: नगर राजनीति गतिविधियों का केन्द्र बन जाता हैं, जिससे लोगों का आकर्षण बढ़ता है और नगरीकरण की प्रक्रिया में गति आती है।

विधायक, मंत्रीजी का आगमन तथा मुख्यालय को संभालने और जनसंख्या वृद्धि तथा बढते विस्तार की व्यवस्था बनाये रखने के लिए कार्यालयों की आवश्यकताएँ पड़ती है। इसी कारण महानगरों में पुलिस, न्यायालयों, जेल, महानगरपालिका आदि प्रशासन इकाईयों का विकास होता हैं, जिससे महानगर का रूप धारण कर लेते है।

(6.1.6) महानगरों की सुविधाओं का आकर्षण

हम देख सकते है कि देश का इतना विकास होने के बावजूद भी गाँव की सुविधाओं में कही कोई परिवर्तन नहीं आया है। आज भी गाँव में पानी, बिजली जैसी जीवन की अत्यंत आवश्यक वस्तुऐं भी उपलब्ध नहीं है। अस्पताल और शाला की भी सुविधा का अभाव से मर जाते है। गाँव के बच्चे शिक्षा के अभाव में आजीवन भटकते नजर आते है। इसके विपरीत नगर में सारी सुविधाओं से संपन्न होते है। नगरों की चकाचौंध एवं मनोरंजन के विविध साधन भी गाँव वालों के लिए आकर्षण का केन्द्र होता है। गाँव में पैसा रहने पर भी उसमें सुखोपयोग करने के साधन नही होते है। सिनेमा, होटल, सर्कस, नाट्यगृह, पार्क, आदि चीज़े है जो गाँव के व्यक्ति को नगर में आने के लिए प्रेरित करती है।

(6.1.7) यातायात के साधनों का विकास

महानगरों के कारण उधोग-धंधे एवं व्यापार बड़े पैमाने में प्रगति होती है। नगर के विकास में यातायात के साधनों के विकास का बड़ा हाथ है। यातायात के साधनों से बस,ट्रक, हवाई-जहाज़, स्टीमर आदि को भी जोड़ देना चाहिए, जिससे माल को लाने-ले जाने में सुविधा रहे और समय,धन की बचत भी होगी। यातायात के साधन एक क्षेत्र को दूसरे क्षेत्र के साथ जोड़ने का कार्य करते हैं और जो क्षेत्र सीधे यातायात की सुविधा से जुड़ जाते हैं वे शीघ्र ही नगर और महानगर में परिणत हो जाते है।

(6.1.8) औधोगीकरण

भारत के स्वतंत्रता के बाद उधोगों का विकास बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। महानगरों के विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका औद्योगिक क्रांति की ही रही है। जहाँ बड़े-बड़े औद्योगिक एकम स्थापित एवं संचालित होते हैं, वहाँ नगर बनने में वक्त नहीं लगता। औद्योगिकरण के कारण जीवन

की आवश्यक वस्तुएँ सरलता से और अधिक मात्रा में उपलब्ध होने लगी। इससे कुटिर उधोग समाप्त हो गये और गाँवों में बेरोज़गारी बढ़ गयी, जिससे निजात याने ग्रामीण वर्ग नगरों की तरफ आकृष्ट होने लगे। सांप्रत समय में नवीन उधोगों के साथ-साथ नगरीकरण की प्रक्रिया भी तीव्रतर होती जा रही है।

औद्योगिकरण के विकास ने कस्बे, गाँव और शहर को बहुत प्रभावित किया है। इसके प्रभाव से गाँव की मान्यता एवं रुढियों को तिलांजलि मिलने लगी है। आज के लोग वैज्ञानिक एवं टेक्नोलॉजी के इस्तमाल से विचारशील एवं बौद्धिक होने लगे है। शिक्षा का व्याप भी बढ़ा है। छोटे-छोटे इलाकों के बच्चे पढ़ाई हेतु शहर या महानगर की तरफ आ-जाने लगे है। कालांतर व्यक्ति ने अपनी अस्मिता को एक नयी पहचान दी है। उधोग ने व्यक्ति को नौकरी के असंख्य विकल्प दिये।

6.2 हिंदी कहानी में नारी चित्रित महानगरीय जीवन शैली

महानगरों का विकास सांस्कृतिक,औद्योगिक और राजनीतिक के साथ जुड़ा हुआ है। स्वतंत्रता के बाद औद्योगिक क्रांति आयी और क्रांति के परिणामस्वरूप जिन नगरों का विकास हुआ वे कालांतर में कारख़ानों, मिलों, शिक्षण संस्थाएँ, सिनेमाघर, होटल, चिकित्सा सुविधा आदि के विकास के कारण महानगरों के रुप में विकसित हो गए। यहाँ अनेक संस्कृतियाँ, भाषाएँ, एवं जीवन पद्धति एक साथ चलती है,जिसका एक-दूसरे पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

प्राचीन परंपराओं, मान्यताओं और आदर्शों का विरोध तो आज हो रहा है,पर स्वस्थ्य नये मूल्यों का अभाव है। अपने आपको आधुनिक और नगरीय कहलाने की होड़ में व्यक्ति पाश्चात्य आदर्शों को ग्रहण तो कर लेता है, किन्तु इन आदर्शों को न तो पूरी तरह स्वीकार पाता है और न

छोड़ पाता है। ऐसी असंमजस्य की स्थिति में उनके विचार कुंठित एवं मन तनावों से भर जाता है।

महानगरों का जीवन ऊपर से जीतना सहज,सरल,आकर्षण एवं सुखमय दीखता है उतना नहीं है। महानगरों की अनेक समस्याओं, परिवेशगत,जटिलता और क्रूरता तथा इस सबके बीच अपने अस्तित्व के लिए जूझते असहाय, विवश मानव के संघर्ष ने कहानीकार को न केवल भीतर तक झकझोर दिया है,बल्कि उनकी संवेदनाओं को भी आहत किया है। महानगरीय जीवन शैली का चित्रण कहानीकारों का वर्ण्य-विषय की कटु यथार्थ का चित्रण सूक्ष्मता से निम्नवत् रुप से हुआ है।

(6.2.1) बेरोज़गारी और आर्थिक संकट

बेरोज़गारी की समस्या गाँव और शहर में लगभग एक समान ही है। **"**वर्तमान जीवन की बहुत बड़ी विसंगति देश में फैली शिक्षित बेरोज़गारी है। बेरोज़गारी का एक पक्ष यह भी है कि उचित व्यक्ति को समुचित रोज़गार नही मिलता है। किसी पद के लिए प्रतिभा को न देखकर सिफारिश की शक्ति को देखा जा सकता है। अवसर की समानता का मूलाधार संविधान की पोथियों में क़ैद होकर रह गया। इन स्थितियों में युवा मन में एक गहरी निराशा और आक्रोश को जन्म दिया है।**"9**

प्रभु जोशी की कहानी 'यह सब अंतहीन' कहानी में कथानायक सचू अपनी बेकारी की स्थिति में इतना टूट जाता है कि अपनी बहन को पड़ोस के गुंडों की हवस का शिकार होते देखकर भी उत्तेजित नही होता। वह इस घटना को आर्थिक लाभ के संदर्भ में देखता है। वह स्वयं तस्सली के साथ कहता है - **"**और लोग भी तो नगरों में भी अपनी बहनों के लिए ग्राहक तलाश कर लाते है। बहन की अस्मिता तो जा रही है,यदि उस अस्मिता के सहारे दोनों की रोटी-राज़ी चल जाए तो क्या बुरा ?**"10**

चित्रा मुदगल की 'लिफाफा' कहानी में बेरोज़गार युवान की मानसिक स्थिति का चित्रण किया है। बहन की शिकायत करने पर माँ उसे ही सब्र करने के लिए कहती है। कारण में माँ का कहना है कि अनु को ओफिस जाना पड़ता है। उस पर पाखाने में ज्यादा देर बैठने पर भी पाबंदी लगा दी गयी। घर की हर चीज अनु के लिए पहले है क्योंकि वह घर चलाती है,जबकि वह बेकार है। माँ-बाप के अर्थ से अनु को श्रेष्ठ और उसके भाई को निम्न बना दिया है। वह सोचता है - "देश के सारे बेकार युवकों को संगठित होकर लड़कियों के खिलाफ नारे बुलंद करने चाहिए कि वे घरो की शोभा है, कृपया घरो में ही रहे दफ्तरों जगह खाली करें - देश की महिलाओं को भगाओं, बेकारी मिटाओं।"**11**

भारतीय मध्यम वर्ग की आर्थिक स्थिति आज़ादी के इतने वषों बाद भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। ममता कालिया ने 'काली साड़ी' कहानी में एक स्कूल मास्टरनी का चित्र खींचा है। "सारी तनखा मकान का किराया बिजली का बील, बच्चों की फ़ीस, रिक्शे का भाडा, दूध के दाम देते-देते रामनाम सत हो जाती है। बाजार की कोई चीजें उसे आकर्षित करती है, परंतु पर्स खाली होने से वह ख़रीद नही पायी।"**12**

बेरोज़गारी के कारण व्यक्ति का व्यक्तित्व कुंठित होता है, किन्तु कभीकभार ऐसा भी होता है कि मातृत्व के अस्वीकार के पीछे आर्थिक कारण जिम्मेदार हो। आज के इस अर्थ प्रधान युग में अपनी जीविकोपार्जन में मातृत्व एक भार सा लगता है। सूर्यबाला की कहानी 'गुमनाम दायरे' में ऐसी स्त्री का वर्णन है जिसकी एक बेटी होस्टेल में रहती है और पति अपने कार्य में व्यस्त है। वह अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए अपने पति से एक बच्चे की माँग करती है। इस पर उसका पति आर्थिक संकट को ध्यान में रखता हुआ कहता है - "एक और बच्चे

का मतलब है- थी हन्डेड पर मन्थ। इन्पोसीबल ! अभी भी पूरा नही पड़ता।**"13**

अभी के समय में करोड़ो युवा, बच्चे और महिलाएँ रोज़गार की तलाश में दूर दूर भटक रहे है,तो दूसरी और तस्करी, जमाखोरी, मुनाफ़ाखोरी, कालाबाजारी, मिलावट के कारण भ्रष्ट अधिकारियों एवं राजनीतिज्ञों के घरों में विलासिता का नग्न नाच हो रहा है।

(6.2.2) निम्नस्तरीय जीवन शैली

स्वतंत्रता के बाद गांधीजी द्वारा कल्पित राम राज की धारणा पूरी तरह से खत्म हो गई। मिथ्यात्मक प्रचार एवं भ्रमजलों में सता मूलक राजनीति में आम आदमी की उपेक्षा होने लगी। वह महानगरीय चकाचौंध के चक्रव्यूह में ऐसा फँस गया कि अपनी पहचान ही भूल गया। संविधानिक अधिकारों से वंचित निम्नस्तरीय जीवन जीने के लिए बाहय हो गया। नगरों में आपसी रिश्तों की जगह धन का महत्व बढ़ता ही चला गया। देश की अर्थ व्यवस्था पर पूँजीवादी शक्तियों का शिकंजा कसता गया जिससे अमीर अत्यधिक अमीर और ग़रीब अधिक ग़रीब होता चला गया। आज का मजबूत किसान, श्रमिक फँसे नाली के कीड़े की तरह रेंगते हुए दयनीय स्थिति को पहुँच गया है।

निम्न वर्ग के लोग के पास जिनके पास श्रम को छोड़कर उत्पादन का कोई साधन नही होता है। हिन्दी साहित्य कोष में लिखा है कि - **"**यह समाज का वह भाग है जो अपनी जीविका का उपार्जन श्रम से करता है और अधिकतर इस वर्ग का ही शोषण किया जाता है।**"14** नारी कारख़ानों में काम करनेवाले श्रमिक, मज़दूर, वेश्याएं, भिखारी आदि काम करती है। कभी-कभी वह रोज़गार पाने में असमर्थ रहती है। उसको एक दिन का काम मिला तो दूसरे दिन का कुछ पता नही होता है। महानगरों में यह

काम करने वाली नारी गंदी बस्तियों में, झुग्गी झोंपड़ियों में, औद्योगिक कालोनियों में ऐसे में रहती है।

(6.2.3) मूल्यों का विधान

सभ्यता के विकास की सबसे मूल्यवान उपलब्धि मूल्य है। मनुष्य ने त्याग, करुणा, ममता, दया, सत्य आदि मूल्यों का सम्मान किया है। नई पीढ़ी ने घिसे हुए रुढ, जर्जर,शाश्वत मूल्यों संस्कार का विषय न होकर हिकारत का कारण बन गया है। डॉ.श्यामसुन्दर मिश्र लिखते है कि - "स्वतंत्रता के बाद राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में आए परिवर्तनों ने जनमानस को झकझोर दिया और परंपरागत आदर्शों, मान्यताओं जीवन मूल्यों व आस्थाओं का विधटन हुआ है।"**15**

जीवन मूल्यों का विधटन सांप्रत युग में हुआ है और मानवीय संम्बधों में बिखराव आया है। इस बार में नरेन्द्र मोहन लिखते है - "सातवें दशक के शुरू होते ही हमने पाया कि इस एक दूसरे माहौल में आ गए, जहाँ हमारे नैतिक मूल्यों और मान्यताएँ अटपटी सी लगने लगी है। निस्संदेह यह संपूर्ण मोहभंग की घडी है,जिसे हम पिछले दशक से टालते आ रहे थे। मानव नियति की क्रूरता और भयावहता हमारे सामने प्रत्यक्ष होने लगी।"**16**

यादवेंद्र शर्मा की 'नारी और पत्नी' कहानी में आधुनिक युग के इस मूल्य संकट का यथार्थ चित्रण हुआ है। नायक विश्वास की पत्नी शीला नर्स है। कालांतर शीला अपने पति विश्वास से ऊब जाती है और डॉ.सोमेशकुमार से प्रेम करने लगती है। वह डॉक्टर के साथ अनैतिक सम्बन्ध जोड़ती है। विश्वास को इस बात का पता चलता है तो वह चिल्लाता है - "तुम पत्नी नही, चुड़ैल हो। प्यार के नाम पर बदनाम धब्बा हो। ..... पत्नी के नाम पर कलंक जाओ खुली हवा की तरह

जिओ।"**17** इसके जैसी ही एक कहानी 'सत्यवान' मणि मधुकर की है। प्रोफेसर सत्यवान शुक्ल की पत्नी कपिला एक मंत्री के साथ यौन सम्बन्ध रखने में कोई संकोच नही करती है। वह अपने पति से छुटकारा पाने के लिए पति को जहर का इंजेक्शन देती है।

प्रगतिशील और फैशन का जामा पहनकर भारतीय नारी उन्मुक्त एवम् स्वच्छन्द जीवन जीने लगी है। परिवार की भावना टूट चूकी है। कभी-कभी उनके गलत कर्मों का फल उनके संतानों को भुगतना पड सकता है। उसकी संतानों को नाजायज घोषित कर या गंदी नालियों में फेंक दिया जाता है। सुधार गृह, नारी उत्थान केन्द्र जैसी पवित्र जगह भी अनैतिक के धाम बन गये है। ज्यादातर महिलाश्रम में होने वाले यौन शोषण का पर्दाफ़ाश हिमांशु जोशी की 'कोई एक मसीहा' नामक कहानी में हुआ है। महिलाश्रम का प्रधान संचालक रेक्टर लाभूबहन की सहायता से लड़कियों को दवा के नाम पर शराब पिलाकर उसका यौन शोषण करता है।

मूल्यों का जतन करना और उसे अगली पीढ़ी में आरोपित करने का कार्य ज्यादातर भारतीय नारी के हाथों में सुरक्षित था, किन्तु नारी खुद मूल्यों को त्याग ना शुरू कर दिया है। नारी चेतना के कारण आज परिवार और सामाजिक स्तर पर नए मूल्य स्थापित करने लगी है। सांप्रत नारी न तो दोयम दर्जे पर है और न पुरुष के शोषण का शिकार। उसने घर की चहारदीवारी को लांदकर अपनी अस्मिता और कार्यकुशलता का परिचय दिया है। आधुनिक भाव-बोध और पाश्चात्य नारी मुक्ति आंदोलन के कारण आज स्त्री-पुरुष संम्बधों में जो नये आयाम दिखाई दे रहे है।

(6.2.4) आर्थिक एवं शारीरिक शोषण

आर्थिक शोषण आज शारीरिक शोषण तक पहुँच गया है। महानगरों में नारी को आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ता है। इससे बहार निकलने के लिए नारी किसी भी हद तक जा सकती है। आजकल महानगरों में शारीरिक शोषण यानी यौन प्रवृत्ति का विकृत रुप दिखाई देता है। महानगरों में विवाहपूर्व और विवाहेत्तर शारीरिक संबंध पनप रहे है। वेश्यावृति एवं यौन दुराचार बढ़ गया है। आर्थिक कारण अधिकतर नारियों इस व्यवसाय में लगी है और भी जैसे धर्म के कारण, ज़बरदस्ती या स्वेच्छा से भी कई नारियाँ इस व्यवसाय में लगी है। नगरों या महानगरों में पहले वेश्याओं के चकले चलते थे। आज इसका स्वरूप बदल गया है। कोठों के अलावा अन्य अनेक छुपे तरीकों होटलों, क्लबों में यह धंधा चल रहा है।

महानगरों में पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव देखने को मिलता है। आज महानगरों में विवाह पूर्व अवैघ यौन संबंध विवाहतेर अवैध यौन संबंध, फ्री सेक्स का बोलबाला होना, बिना विवाह मातृत्व की संकल्पना की बढ़ोतरी होना, नारी स्वतंत्रता के नाम पर नारी समाज में यौन संबंध का विकास होते रहना पुरुषों की बराबरी में काम करनेवाली नारियों की यौन व्यापार में बराबरी की माँग करना आदि तथ्यों के साथ यौन संबंधों के विभिन्न रुप सामने आ रहे है।

हम आजकल महानगरों में देखते है कि अनमेल विवाह,विधवा विवाह, वेश्यावृत्ति, कालगर्ल, लेस्बियन समस्या, बिना विवाह मातृत्व आदि यौनाचार के नए आयाम उदधाटित बने है। शारीरिक शोषण का शिकार अधिकांशतः युवान लड़कियों या बच्चे ही बनते है। मालती जोशी द्वारा प्रकाशित 'सपने' कहानी में इस की सफल अभिव्यक्ति हुई है।

शाली की जवान लड़की की ओर वासना की दृष्टि से देखने की वृति रखने वाले मौसाजी का बर्ताव रिंकी से ठीक नही था। बेवजह रिंकी जानते हुए भी किसी को बता नही पा रही थी। **"**वेडिंग वाले दिन भी वह हाल हुआ। अंकल किनारे पर खड़े सबको सहारा देकर चढ़ा रहे थे। जैसे ही रिंकी की बारी आई उन्होंने उसे चूँ गोद में उठा लिया जैसे वह भी गुड़िया की तरह नन्ही बच्ची हो देर तक झुरझुरी होती रही।**"18**

शोषण की प्रकिया आर्थिक शोषण तक सीमित नही रही। कर्मचारी नारियाँ का शारीरिक शोषण इसका अगला चरण होता है। ओम गोस्वामी की 'दर्द की मछली' कहानी में नसीबों अपने पति के मृत्यु के पश्चात् नगरपालिका में अपनी नौकरी टिकाये रखने के लिए सैनीटरी बाबू से देह सम्बन्ध जोड़ने के लिए मजबूर बन जाती है। ससुर की प्रताड़ना सहकर भी वह सैनिटरी बाबू से सम्बन्ध नहीं तोड़ पाती और वह ससुर से कहती है - **"**तेरे हाथ जोड़ती हूँ बूढ़े! धीरे बोल, सैनिटरी साहब ने सुन लिया तो नाराज़ होगा।**"19**

निरुपमा सेवती की 'शायद हाँ शायद नही' कहानी में स्वरूप कामुक प्रेमी के रुप में प्रकट हुआ है। वह झूठ बोलकर नौकरी की लालच दिखाकर मजबूर लड़कियों का शारीरिक शोषण करता है। वह तरला नामक लड़की को प्रेम एवं शादी का झाँसा देकर होटल के कमरे में ले जाता है। तरला ने शादी की बात छेड ने पर कहता है - **"**अरे क्या प्यार प्यार ..... ये बातें छोडो भी। बस बात तो यहीं सोचों की हम दोनों एक दूसरे के साथ कितने सुखी हो सकते हैं, अब जिद्द छोडो। तुम जानती हो मैं तुम्हें वह नौकरी दे सकता हूँ इतनी बड़ी कम्पनी में कि कुल मिलाकर डेढ हजार मिलेंगे।**"20**

(6.2.5) आवास की समस्या वाली जीवन शैली

महानगरों की बढ़ती आबादी के कारण आवासों का अभाव देखने को मिलता है। यहाँ रहने की समस्या दिन प्रति दिन बहोत गंभीर बनती जा रही है। परिवार के चार व्यक्ति एक कमरे में सिमटकर रहने के लिए मजबूर हो रहे है। जहाँ जगह की अत्यंत कमी होती है, वहाँ एक ही कमरे में सारा व्यवहार करना पड़ता है।

गिरिराज किशोर की 'गाउन' कहानी एक ऐसे परिवार की कहानी है जिसमें एक साथ सोये बच्चे सुबह सरके हुऐ गाउन के नीचे शरीर के हिस्से को देख लेते है। जुगुप्सा वस बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। नाराज घर की औरतें कहती है - **"**तुम्हारे भाई और उसकी चहेती ने धर को नरक बना रखा है। मैं तो चुप हूँ। कुछ बोलती नही। बड़े-बड़े बच्चे है। काली रात को नंगी सोती है नामर्जाद नंगी। गाउन थोड़ा उधड़ जाये तो बच्चों पर क्या असर पड़े ? वह गाउन भी क्या। ढाके के मलमल का है। आपकी लाड़ली भी आज कह रह थी कि अम्मा हम भी वैसा ही गाउन खरीदेंगें।**"21** महानगरों में आवास के कारण नारी अपनी मरजी से कपड़े भी नही पहन सकती है।

महानगरों में रहने की समस्या के युवा वर्ग अपने अंगत पलो का आनंद भी नही ले सकते है। चारों और मानव वाला समृद्ध ही नजर आता है। निर्मल वर्मा की 'उनके कमरे' कहानी में ऐसे युवा लड़के-लड़की की बात है जो अपनी एक शाम एक दूसरे के साथ बिताना चाहते है, लेकिन उनके पास अपना कोई कमरा नही है। लड़का जिस होस्टेल में रहता है उसके कमरे में उसके अलावा पाँच लड़के उसके साथ रहते है, इसलिए वह लड़की को वहाँ ले नही जा सकता है। लड़की भी एक धार्मिक संस्था से

जुड़ी है जहाँ वह लड़के को अपने साथ नही ले जा सकती है। इसलिए दोनों सड़कों पर घूमते रहते है।

जगह की कमी के कारण महानगरों में मकान छोटे बनते गये है। दो अलग- अलग पास में खड़े कमरों की आवाज़ अपने कमरे की आवाज़ ही महसूस होती रहती है। उषा प्रियंवदा की 'पूर्ति' कहानी में इसकी अभिव्यक्ति हुई है। तारा को अपना कमरा याद आता है। जिन्दगी एक मेज़, एक कुर्सी और एक चारपाई में बँध गई थी। जहाँ से वह लड़कियों की हँसी और कहकहे सुन सकती थी। कमरा जो कि किचन के इतने पास था कि खाना बनानेवालियों की आपस की लड़ाई और सैंकड़ों थालिया और कटोरिया दोनों वक्त माँजे जाने का शोर उसे साफ साफ सुनाई देता रहता है।

(6.2.6) स्त्री-पुरुष के संम्बधों में बदलाव

परिवार में स्त्री-पुरुष के आपसी संबंधों की नींव पर खड़ा होता है। परिवार की श्रेष्ठता पारिवारिक के पारस्परिक प्रेम, सेवा, समर्पण आदि भावो पर निर्भर होती है। आज ये दोनों दोराहे पर खड़े नजर आ रहे है। दोनों के बीच की मान-मर्यादा टूट चुकी है। और वे अपनी कुण्ठा को मिटाने दूसरे स्त्री-पुरुष की तरफ आकर्षित हो रहे है। ऐसे ही संम्बधों के कारण वेश्यावृति एवं कालगर्ल की संख्या शहरों में बढ़ी है और पुरुषों में भी यौन संम्बधों के प्रति खुला और धिनौना भाव जगा है।

औधोगीकरण ने सामाजिक व्यवस्था को ज्यादा प्रभावित किया है। गाँव के लोग बिना विचारे शहरों की ओर आने लगे है। शहरों की महँगाई रहने की समस्या ने पारिवारिक नींव को हिला कर रख दिया है। यह महँगाई के कारण घर की औरतों को घर से बाहर काम करने के लिए मजबूर बना दिया है। बाहर निकली नारी अधिक मुखर, स्वतंत्र एवं

आत्मनिर्भर हो गई। स्त्री-पुरुष संम्बधों को लेकर अनेक कहानी की रचनाएँ प्रस्तुत है।

हमारे आस-पास के समाज में विवाहेत्तर संम्बधों की स्वीकृति नही देता है। लेकिन महानगरों में जैसे-जैसे मान्यता एवं मूल्यों में परिवर्तन हो रहा है, वैसे-वैसे विवाहेत्तर संम्बधों में वृद्धि हो रही है। ऐसे सम्बन्ध से पति-पत्नी के संम्बधों में तनाव एवं कड़वाहट पैदा करता है। यह जब ज्यादा बढ़ जाता है तब सम्बन्ध विच्छेद तक की स्थिति निर्माण हो जाती है।

स्त्री-पुरुष संम्बधों की कुरुप सत्यता का उदघाटन गिरिराज किशोर की 'रिश्ता' कहानी में गहराई से किया गया है। कहानी की मनकी विधवा होने के बावजूद यौन संम्बधों के प्रति स्वच्छन्द दृष्टि रखती है। मनकी को एक से अधिक पुरुषों के साथ सम्बन्ध रखने में कोई हिचक नही होती। इसलिए वह कहती है - **"**पहले बात तय कर। मुझे दूसरा आदमी मिल रहा है। डेढ सेर तगड़ी देगा। तेरे से प्यार मोहब्बत है इसलिए सेर की माँग कर रही हूँ, वह हँसकर बोली मेरे बकरी को तो खून चाहिए तू नही तो तेरा भाई सही। मैं डाक्टराईन नहीं दबाकर रखूँ।**"22**

मालती जोशी की 'पीर पर्वत हो गई' कहानी का पात्र प्रदीप निर्मल से शादी कर लेने के बाद भी अपनी विधवा भाभी के साथ नाजायज सम्बन्ध रखता है। जब पत्नी निर्मल को यह सब असहाय हो जाता है तो तब वह पति से इस सब का जवाब माँगती है। तब प्रदीप कहता है कि - **"**यह सब तो ऐसे ही चलेगा। तुम्हें रहना हो तो रहो नही तो रास्ता नापो।**"23** क्या महानगरों में यह सब चलता है? क्या यही ही नारियाँ की जिन्दगी है।

महानगर के जीवन में पति-पत्नी जुड़ जाते है साथ ही उसमें जटिलता भी आ जाती है। कमलेश्वर जी की 'दुखों के रास्ते' कहानी में बलराज और ललिता के दाम्पत्य जीवन का बिखराव अंकित है। बिखराव कारण पति-पत्नी के बीच बलराव का मित्र विरेन्द्र का आगमन है। कहानी बलराव, विरेन्द्र एवं ललिता के प्रेम त्रिकोण को उपस्थित करती है। महानगरों में पति-पत्नी अपने सम्बन्ध को भूलकर दूसरे से सम्बन्ध बना लेते है।

(6.2.7) तनाव, कुण्ठा एवंम् घुटन भरा जीवन

हमारे देश की आज़ादी के बाद महानगरों की तेजी से वृद्धि हुई और उतनी तीव्रता से आर्थिक वैषम्य भी बढ़ा। महानगरीय मध्यमवर्ग की बढ़ती महँगाई चारों और से जीवन को जकडती यांत्रिकता और सम्मान पूर्वक जीने की उसकी आकांक्षाओं ने उनके संघर्ष की तीव्रता को बढ़ा दिया है। इसमें वह वर्ग टूटता एवं घुटता रहा। घोर निराशा ने कुण्ठा को जन्म दिया और बेधक एकाकीपन ने उसे देर लिया।

वर्तमान समाज में नारी टूटती एवं घुटन भरी जीवन जीने वाली नजर आ रही है। नारी का तनाव यदि उसके अपने घर परिवार के तथा ईद-गिर्द की दुनिया के है तो सामाजिक तनाव समाज में हो रहे नैतिक मूल्यों के पतन से उत्पन्न है। आज नारी का जीवन इतनी विसंगतियों से भरा पड़ा है और मानसिक स्तर पर इतने अंतर्द्वंद है कि नारी निरंतर घुटती रहती है।

कभी-कभी आर्थिक विपन्नता संम्बधों में कड़वाहट या तनाव पैदा कर देती है। ऐसी स्थिति में दंपत्ति अपने सुखो को भूलकर उसे एक बोझ की तरह ढोते है। उसके आपसी व्यवहार में एक अपरिचय का भाव घुस जाता है। सुधा अरोड़ा की कहानी 'महानगर की मैथिली' में दाम्पत्य

जीवन का तनाव साफ तौर पर उभर कर आया है। दोनों पति-पत्नी नौकरी के बाद थके पाँव घर लौटते है तो बड़ी मुश्किल से दो ज़रुरी बातें कर सकते है। ऐसी बंधी बंधाई रुटीन जिन्दगी में दोनों अनजाने अनकहे कारणों से कुढ़ते रहते है। उनके बीच पारस्परिक लगाव या प्रेम ही नही रहा यह जानते हुए भी दोनों इसका कारण नही ढूँढ पाते और आखिर में तनाव के शिकार हो जाते है।

पढ़ी-लिखी नारी अधिक सजग एवं बौध्दिक हो गई है। अत:समाज और परिवार के साथ वैचारिक तालमेल न बैठ सकने पर वह कुण्ठा व तनाव का शिकार हो जाती है। शिक्षित नारी ने जहाँ परंपरागत मान्यताओं को खारिज किया है। वही एक नये स्वतंत्र परिवेश का निर्माण भी किया है। मालती जोशी की कहानी 'मध्यान्तर' में विमल पंडित के कंधो पर घर गृहस्थी और दफ्तर का बोझ है जिसे बेलेन्स करते करते स्वयं तनाव एवं धुटन का अनुभव करती है। पति के दोहरे मापदंड से परेशान है। उसका पति अगला बच्चा अभी नही दो के बाद कभी नहीं का नारा लगा रहा है। जबकि बहन को चार लड़कियों के बाद लड़का होने पर विमल चीखकर कहती है कि - **"**औरत कहलाने को कुछ बाकी भी रहने दिया है तुमने। सब तो निचोड़ दिया है। पैसे कमाने की मशीन रह गई हूँ मैं इसलिए मेरा रोना कल्पना सबकी आँखों में आता है। मशीन हूँ न रोने का हक थोडे ही है मुझे।**"24**

महानगरों की भीड़-भाड़ में व्यक्ति की अकुलाहट जीवन की वेदना, घुटन आदि आधुनिक बोध का परिणाम है। नित्य एक सा जीवन, पारिवारिक झगडे, दफ्तर का ऊबाऊ, नीरस तथा अनिश्चित वातावरण, रास्ते की भीड़-भाड़ शोर और धक्का-मुक्की आदि से व्यक्ति का मन घुटन एवं तनाव से भर जाता है। ऊपर से समाज के प्रति असंतोष, आर्थिक असमानता और जीवन निर्वाह की समस्या ने मानसिक तनाव को

बढ़ावा दिया है। सांप्रत पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था इतनी भयानक और सशक्त होती जा रही है कि उसमें जीने वाले साधारण मनुष्य के प्राण निराशा, घुटन, पीड़ा आदि से छटपटा रहा है। मजबूरी और विवशता ने व्यक्ति में कुण्ठाएँ और विकृतियाँ उत्पन्न कर दी है।

(6.2.8) एकाकीपन एवं अकेलापन की जीवन शैली

शहरों और महानगरों की देन अकेलापन है। महानगरों में संयुक्त परिवार व्यवस्था टूटने के कारण अकेलेपन की समस्या बढ़ी है। यांत्रिक जीवन व्यस्तता एवं स्वार्थ भावना ने मानव-मानव के बीच अपरिचय की दीवार खड़ी कर रखी है। महानगरीय आदमी भीड़ में रहकर भी अजब सी बेचैनी और अकेलापन का अनुभव कर रहा है। अपनी दौड़ती जिन्दगी में वह ठीक से न किसी से आपसी सम्बन्ध रख पाता है और न निभा पाता है।

आज के औद्योगिक युग में नारी अपने सामाजिक एवं व्यक्ति जीवन में यांत्रिक प्रकिया का एक पूरजा बनती जा रही है। महानगरों की भीड़ में अकेली रहकर भीतर ही भीतर टूट रही है। यह यांत्रिक जीवन के बीच गिरी हुई नारी को देखने की या सूनने की फ़ुरसत किसे है ? दोस्तों या पार्टियों से घिरी हुई है फिर भी दिल का खालीपन उसे खाये जा रहा है।

अपनी प्रतिक्रिया देते हुए देवेन्द्र इस्सर ने लिखा है कि - "इस अर्थव्यवस्था में स्वार्थ भौतिक सुख,धन और पद प्रतिष्ठा महत्वपूर्ण है। निजी रिश्तों और परिवार के विघटन में हर आदमी को अपने भाग्य का निर्णय करने के लिए बेसहारा और तनहा छोड़ दिया है। वैयक्तिक रिश्तों और संयुक्त जीवन के विघटन के कारण मनुष्य एक ऐसी स्थिति से

गुज़र रहा है जिसे कई नाम दिये गये है- एकाकीपन, अजनबीपन, अवैयक्तिक्ता, अलगाव और एलिएनेशन।**"25**

उषा प्रियंवदा की 'स्वीकृति' कहानी में अकेलेपन से पीड़ित, प्रेम सम्बन्ध के लिए तरसती नारी का चित्रण किया गया है। यह नारी अपने घर एवं पति से दूर विदेश मे है। इस बीच जया के जीवन में एक विदेशी मित्र आता है,जो उसे कुछ समय के लिए प्रसन्न कर जाता है। वह अपनी भावनाओं और आचरण पर पड़े सभी आवरणों को एक झटके में फेंक देना चाहती है। लेकिन उसका विदेशी मित्र उसे पूरी तरह स्वीकार नही कर पाता। इस प्रकार वह अंत तक अकेलेपन को झेलने के लिए बाधित हो जाती है।

'परिन्दे' कहानी निर्मल वर्मा की नयी कहानी परंपरा की पहली कहानी समझी जाने वाली कहानी है। जिसमें लतिका के अकेलेपन को उजागर किया गया है। मिस लतिका एक पहाड़ी कस्बे की कान्वेंट स्कूल में टीचर है। अपने प्रेमी गिरीश की मौत के बाद बिलकुल वह अकेली पड जाती है। वह अकेलेपन में इतनी खोई है कि छुट्टियों में कही बाहर जाने के बजाय वीराने अकेले स्कूल में रहना पसंद करती है। ह्यूबर्ट के पूछने पर वह कहती है कि - **"**अब यहाँ मुझे अच्छा लगता है - पहले साल अकेलापन कुछ अखरा था, अब आदी हो गई हूँ।**"26**

(6.2.9) संयुक्त परिवारों का विस्छेदन

हम सब देखते आ रहे की अनादिकाल से भारतीय संस्कृति संयुक्त परिवार का समर्थन करती है। एक छत के नीचे तीन-चार पीढ़ियाँ रहा करती है, किन्तु जीवन की व्यवस्ता एवं अर्थ केन्द्रित दृष्टि ने संयुक्त परिवार प्रथा को अधिक ठेस पहुँचाई है। संयुक्त परिवार के जगह लघु परिवार को महत्व दिया जाने लगा है। शहरी औधोगीकरण ने ग्रामीण गृह

उधोगों को नष्ट कर दिया है, परिणाम इनसे जुड़े अनेक श्रमिक रोज़गार की तलाश में नगरों में आकर बसने लगे है। इससे संयुक्त परिवार का विघटन हुआ है। अत: कह सकते है कि आर्थिक दबावों ने संयुक्त परिवार प्रथा को छिन्न-भिन्न कर दिया। समग्र रुप से देखे तो महानगरीय जीवन में पारिवारिक विभाजन का सबसे प्रभावशाली पहलू अर्थ है।

रमेश बत्रा की 'हुटर' कहानी में संयुक्त परिवारों के टूटने का चित्रण किया गया है। जग्गी अपने पति के आय में अपना तथा अपने बच्चों का निर्वाह कर नही पाती अत:वह संयुक्त परिवार का बोझ को ढोने से साफ इनकार कर देती है।

पारिवारिक संम्बधों के टूटने का कारण नारीयाँ में बढ़ता लालच का भाव भी है। सुधा अरोडा की 'दमनचक्र' में इसकी सूक्ष्म अभिव्यक्ति हुई है। 'पति परमेश्वर' कहानी में पत्नी पति से अधिक पढ लिखकर जब लेक्चरर बन जाती है तो वह पति की तुलना कॉलेज के लेक्चरर से करती है जहाँ पति में अनेक कमियाँ नजर आती है। वर्तमान पति उसे किसी भी ओर से योग्य नही लगता। अत:वह पति को छोड़कर लैक्चरर से शादी कर लेती है।

पश्चिम के अन्धे अनुकरण के कारण भारतीय परिवार टूटते नजर आ रहे है। गोविन्द मिश्र की 'शायग्रस्त' कहानी में इसका प्रमाण है। नायिका पैसों की चकाचौंध में भौतिक सुख की ओर आकर्षित होकर परिवार को भी भूल जाती है। वह पति को छोड़ कर किसी विदेशी व्यक्ति से जुड़कर अपने परिवार को त्याग देती है।

अक्सर पति-पत्नी के बीच तीसरे व्यक्ति का आगमन परिवार टूटने का कारण बन जाता है। आशीष सिन्हा की 'एक एब्सर्ड नाटक' कहानी की अंजू अपने पति को छोड़कर राजेश के प्रति आकर्षित होती है। वह पति

के नाम चिट्ठी छोड़कर हमेशा के लिए राजेश के साथ भाग जाती है। **"**मैं राजेश के साथ जा रही हूँ। हाँ राजेश के साथ। ढूंढने या लौट की सब चेष्टाएँ व्यर्थ प्रभावित होगी।**"27**

इस तरह कहानीकारों ने संयुक्त परिवार के विभिन्न कोण को अत्यंत सूक्ष्मता से अंकित किया है। परिवार में त्याग, परोपकार जैसे मूल्यों का अभाव दिखाई दे रहा है। माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी आदि रिश्तों में नारी में कोई भावात्मक लगाव दिखाई नही पड़ता। अब नारी स्वार्थ केन्द्रित बनती जा रही है।

(6.2.10) यांत्रिक जीवन शैली

महानगरीय जीवन में यांत्रिक जीवन एक स्वाभाविक हिस्सा है। इस यंत्र वाले युग में नारी खुद मशीन बनती जा रही है। महानगरों की फैशनपरस्त क्लब, होटलों की संस्कृति ऊपर से जितनी भी आकर्षक प्रतीत होती हो पर उसमें स्वाभाविकता या सहजता बिलकुल नही होती,सबकुछ बनावटी और छिछला होता है। महानगरों में नारी प्रात: से रात तक एक मशीन कीी तरह कार्य करती जा रही है। उसकी संवेदना, शक्ति, भावना, हृदयस्पर्शी व्यवहार सब कुछ निर्जीव मशीन की तरह हो जाता है।

महानगरों के यांत्रिक ढाँचे में मानवीय संवेदना के सौदर्य स्रोतों का कोई स्थान नही है। मंजुल भगत की कहानी 'शादी की सालगिरह' में पति-पत्नी के बीच में यांत्रिक एवं औपचारिक जीवन का सूक्ष्म चित्रण पाया जाता है। शशांक कभी कादम्बरी से बेहद प्रेम करता था। पर शादी के बाद आज केवल वह औपचारिकता निभा रहा है। कादम्बरी सालगिरह के वक्त सज-धज के पति का ध्यान आकर्षित करना चाहती है पर शशांक लाए हुए तोहफ़ा देकर अपनी पत्नी को खुस करने का प्रयत्न

करता है। शादी के बाद नौकरी एवं व्यापार में इंसान इतना खो जाता है कि पत्नी के साथ उसका संवेदनाशील रिश्ता खत्म होकर केवल जिस्मानी रिश्ता रह जाता है।

अज्ञेय की लिखी हुई 'रोज़' कहानी की नायिका मालती एक बंधी यांत्रिक जिन्दगी जी रही है। मालती का व्यक्तित्व पारिवारिक माहौल में पथरा कर यंत्रवत हो चुका है। अब उसे गृहस्थ जीवन का आनंद प्रभावित नही करता। मालती एक बिलकुल अनैच्छिक,अनुभूतिहीन,नीरस,यन्त्रवत् वह भी थके हुए यंत्र के से स्वर में कह रही है कि - "चार बज गये ..... मानो इस अनैच्छिक समय गिनने - गिनने में ही उसका मशीन तुल्य जीवन वीतता हो।"**28**

इस बात से पता चलता है कि नारी ने खुद ही ऐसी कृत्रिम चीजों का संसार अपने चारों और खड़ा कर लिया है जिनका अस्तित्व पहले कभी नही था। अपने ही हाथों से बनाई चीजों के बीच वह उजल चुकी है। यह स्पष्ट है कि परिवेश में चारों और तेजी से हो रहे महानगरीकरण, मशीनीकरण तथा औधोगिकीकरण के कारण जीवन में गति, यांत्रिकता एवं शोर पैदा हुआ है। इस बीच रहकर नारी ने अपनी भावनात्मकता को खत्म कर दिया है और खुद ही जब मशीन बन चुकी है।

निष्कर्ष रूप में यह कहे तो महानगरीय जीवन में नारी के मन एवं मकान का धरातल शनै:शनै: सिकुड़ता जा रहा है। रिश्ते दिल से नही बुद्धि एवं पैसों के आधार पर निश्चित किये जाने लगे है। महानगरीय स्पर्धा, महँगाई और व्यस्तता ने नारी के भावात्मकता को खत्म कर दिया है। स्त्री-पुरुष अपने पद प्रतिष्ठा एवं महत्वाकांक्षा की पूर्ति हेतु चोरी छिपे अपनी मर्यादा एवं संस्कारों को तोड़ रहे है नाजायज संम्बधों को स्वीकार ने लगे है। नारी का कही जगह आर्थिक शोषण होता है तो कही शारीरिक।

इन सभी की पूर्ति के अभाव में महानगरीय नारी तनाव, कुण्ठा एवं संत्रास का अनुभव कर रही है।

6.3 महीप सिंह की कहानियाँ में नारी की महानगरीय जीवन शैली

"महानगरों के जीवन का सबसे बड़ा संकट यह लगता है कि यहाँ मनुष्य की धीरे-धीरे अमानवीयकरण होता जा रहा है। सभी सम्बन्ध खुलकर व्यावसायिक बनते जा रहे है। पूंजीवादी समाज व्यवस्था किस तरह समाज में जीते हुए व्यक्ति को असामाजिक, क्रूर, स्वार्थी, कुटिल और असुरक्षित बनाती है,इसका भयावह रुप महानगरों में विशेष रुप से दिखाई देता है।**"29**

महीप सिंह महानगरीय बोध के कथाकार है। महानगर उनकी कहानियाँ का परिवेश भी है और मानसिकता भी। परिवेश के तौर पर वह पात्रों की उध्द्वेलित करता है। कस्बे या छोटे शहरों से आए ये पात्र महानगर के जीवन से समरस होने की प्रक्रिया के दौरान भयंकर तनाव से गुज़रते है। महीप सिंह ने महानगर को पात्रों की मानसिकता के अंग के रुप में उनकी सहज जीवन पध्घति के तौर पर भी अपनी कहानियों में अंकित किया है।

डॉ.रजनीशकुमार का कहना है कि - **"**1955 से 1963 तक महीप सिंह मुंबई और दिल्ली में रहे। ये दोनों महानगर इन दोनों महानगरों के परिवेश ही महीप सिंह की कहानी के कथ्य बनकर आये है। इन दोनों कथाभूमियों के अतरंग अनुभव उनकी कहानियों में उभरे है। इसलिए उनकी कहानियों का फलक विस्तृत न होकर इन दो महानगरों तक सीमित रहा है।**"30** महीप सिंह ने भी मुबंई और दिल्ली जैसे महानगरीय परिवेश को आधार बनाकर ही नारी की महानगरीय जीवन दृष्टि को उभारा है।

महीप सिंह के कनैयालाल नन्दन के साथ साक्षात्कार के समय महानगरीय कृत्रिमता और संवेदनहीनता के प्रभाव का नज़रिये से संबंधित किया गया प्रश्न के बदले में महीप सिंह का जवाब सुनने के लायक है। **"**मुझे यह महसूस होता है। मैं इसे संयोग और अपना दुर्भाग्य कहूँगा कि प्रकृति के उन्नमुक्त वातावरण में मैं पला नही। हमेशा मैं महानगरों का जीवन जीता रहा। उसमें प्रकृति का संस्वर्श कभी- कभी महसूस हुआ, जैसे हवा का पूरा आस्वाद क्या होता है वह मैंने कभी गहराई तक अनुभव नहीं किया। मैं समझता हूँ कि महानगरों में जन्म लेने और पलनेवाली पीढ़ी की शायद यही नीयति हो। हम अपने बच्चों से ही पूछ कर देखे कि क्या उन्होंने सूर्योदय कैसा होता है इसे वह जानते है ? बड़ी बड़ी अट्टालिकाओं के पीछे से उगने वाला सूरज और धर वापस लौटने की भीड़ कही खोया हुआ सूर्यास्त हमें कहाँ दिखाई देता है ? मेरी चिन्ता का दूसरा कारण मानवीय संबंधों की कोमलता का निरंतर मरते जाना है।**"31** इस तरह कहानीकार महानगरीय संवेदनहीनता के साथ-साथ नारी के संबंधों में मूल्यहास की स्थिति को लेकर भी चिन्तित मालूम होते है। उनका कहना है कि नारी महानगरों में रहकर स्वार्थी आत्मकेन्द्वी ख़ुदग़र्ज़ बनती जा रही है। जिससे नारी के बाकी सारे संबंधों पर प्रभावित होना स्वाभाविक है। **"**वह कोमल संबंध व्यावसायिक जिसका धरातल मात्र संबंध होता था वह धीरे-धीरे हमारे हाथ से निकलता जा रहा है। सभी संबंध व्यवसायिक बनते जा रहे है। प्रत्येक संबंध में मात्र संबंध का विश्वास टूटता जा रहा है। यह बात मुझे अंदर तक कुरेदती है। मानवीय संबंधों की नाज़ुक सहजता कम हो रही है। इसका दोष आप व्यावसायिक तंत्र को देना चाहे जिन्दगी की भाग दौड की देना चाहे, मशीनीकरण को देना चाहे तो दे दीजिए। वेसी स्थिति नारी की ही ऐसा नही है,सभी लोगों में यही स्थिति है और अब हमारे यही भी तेजी से पनप रही है।**"32** इस तरह पाश्चात्य

संस्कृति, भौतिकवादिता के प्रभाव से नारी की महानगरीय जीवन कई विडंबनाओं, समस्याओं और विषमताओं से ग्रस्त मालूम होता है।

नगर-बोध के महीप सिंह कहानीकार है। उनकी कहानियाँ ज्यादातर महानगरीय जीवन के संदर्भ को लेकर है। 'सन्नाटा', 'लोग', 'पत्नियाँ', 'झूठ', 'घिराव', 'उजाले के उल्लू','काला बाप गोरा बाप','एक स्त्री एक पुरुष', 'गंध', 'शोर','एक लड़की शोभा','ब्लाटिंग पेपर' आदि कहानियाँ नारी की महानगरीय समस्याओं को चित्रित करती है। डॉ.भगवानदास वर्मा ने महीप सिंह की कहानियों को तीन मोड़ पर चली है। **"**पहला मोड़ प्रत्यक्ष क़स्बाई संस्कारों में दिश्रित चरित्र का महानगरीय बोध हो, दूसरा जिसमें गाँव से आए लेकिन प्रत्यक्ष महानगर संस्कृति में पले पोसे और संस्कारित चरित्रों का महानगरीय बोध हो, तीसरा वह जिसमें महानगर में ही जन्मे और वही दीक्षित हुए चरित्रों का महानगरीय बोध हो।**"33** इन तीनों मोड़ के नारी पात्रों की दृष्टि और मानसिकता में काफी अंतर पाया जाता है।

महीप सिंह ने क़स्बाई और महानगरीय संस्कारों की टकराहट से उत्पन्न विडंबना को अपनी कहानी में अभिव्यक्त किया है। 'झूठ' कहानी में भोली-भाली क़स्बाई संस्कारों वाली पत्नी के साथ पति के छल प्रपंच भरे झूठे व्यवहार प्रस्तुत करती है। अरुप अपने प्रेम संबंधों को छिपाने के लिए झूठ का सहारा लेता है। जिसमें यह अपने बड़े भाई बलदेव को चरित्र्यहीन बताता है। **"**बलदेव भैया का एक औरत से नाजायद संबंध हो गया है। ..... और उसे गर्भ ठहर गया है। सबसे मुसीबत की बात यह है कि वह विधवा है।**"34** यहाँ पर नारी को अपने पति के द्वारा धोखा मिलता है।

महानगर का परिवेश विवाहेत्तर स्त्री-पुरुष संम्बधों के बनने और चलते रहने के बहुत से अवसर प्रदान करता है। स्त्री-पुरुषों का एक ही जगह काम करना, उनमें सम्पर्क के अनेक अवसर होना और महानगर की विशाल परिधि में लोगों की निगाहों से बचकर मिलने के कई नए आयाम उत्पन्न कर रहा है। इनमें एक आयाम है इन संम्बधों में एकाधिकार का समाप्त होते जाना। जहाँ पुरुष और स्त्री दोनों ने ही एक दूसरे से मिलने से पहले "अपनी जिन्दगी के पूरे 23 और 27 वर्ष गुजारे हो वो भी घर की चारदीवारी में नहीं स्कूलों, कॉलेजों में पढ़कर और दफ्तरों -स्कूलों में काम कर करके। दोनों के कुछ चचेरे-ममेरे भाई-बहन तो होने ही होते है।"**35** (उजाले के उल्लू) दोनों ही एक दूसरे से अपने अन्य प्रेम प्रसंगों के विषय में झूठ बोलते रहते है और दोनों ही भीतर एक दूसरे के झूठ को समझते हुए भी ऊपर से विश्वास करने का ढोंग करते रहते हैं - "दोनों एक दूसरे की बात पर यकीन कर लिया था, क्योंकि दोनों यह समझते थे कि उनकी बात पर यकीन तभी किया जाएगा जब वे दूसरे की बात पर यकीन करना दर्शाएंगे।"**36** लेकिन महानगर के परिवेश की यह प्रवृत्ति नारी को आहत तो करती ही है।

महानगर में संम्बधों की सहजता समाप्त सी हो गई है। व्यावसायिक्ता नारी का आधारभूत तत्व बन गई है। किसी भी सम्बन्ध को महानगर में इसी तुला पर तौला जाता है कि उसकों बनाने निभाने से क्या लाभ हो सकता है। संम्बधों के इस पक्ष में नारी भी बखूबी वाफिक है और उसका पूरा लाभ उठाती दिखाई देती है। महानगरीय व्यवस्तता ने स्त्री-पुरुष दोनों की प्रभावित किया है,पुरुष की समानता में नारी विशेष प्रभावित हुई है। नारी अपनी आत्मनिर्भरता के खातर घर से बाहर के क्षेत्रों में कार्यरत दिखाई देती है। "आधुनिक युग की नारी कामकाजी बनकर धर से बाहर निकली ज़रुर है। परंतु आज भी परिवार के अत्यंत

महत्वपूर्ण निर्णय पुरुष लेता है और नारी उसका चुपचाप समर्थन करती है। नारी एक समय दो परिवारों से जुड़ी है। एक जहाँ उसका जन्म हुआ (मायका) दूसरा जहाँ वह ब्याहकर गई (ससुराल) भावात्मक दृष्टि से वह एक ही समय दो परिवारों से जुड़ी रहती है।**"37** ऐसे अवसर पर नारी का संघर्ष झेलना स्वाभाविक है। कई प्रसंगों में पुरुष समकक्ष बनने की लालच ने नारी को अनैतिक रास्ते पर चलने के लिए मजबूर किया है। महानगरीय यंत्रणा ने नारी पुरुष के संबंधों को उपयोगितावादी और स्वार्थ के दायरे तक सीमित कर दिया है।

'शोर', 'सीधी रेखाओं का वृत', 'घिरे हुए क्षण','कील','माँ','पेरिस रोड','पत्नियाँ','लोग','एक लड़की शोभा' जैसी महीप सिंह की कहानियों में महानगरीय नारी के संबंधों की विसंगतियों को अभिव्यक्ति मिली है। 'काला बाप गोरा बाप' कहानी बेसहारा पत्नी और बेटियों की दयनीयता प्रस्तुत करती कहानी है। यूनुस अपनी दो बेटियों शीरी और शहनाज को अपनी पत्नी जमीला के सहारे छोड़कर दूसरी शादी कर लेता है। इसके कारण दोनों लड़कियों को बे बाप की जिन्दगी बितानी पड़ती है। 'एक लड़की शोभा' में शोभा परिवार में सभी भाई-बहनों में बड़ी होने के कारण अपने परिवार और छोटे भाई-बहन को संभालने की जिम्मेदारी शोभा को उठानी पड़ती है। 'कील' कहानी में पिता की बड़ी आकांक्षाओं की वजह से मोना तीस- पैंतीस साल तक अविवाहित बनी रहती है। 'काला बाप गोरा बाप','एक लड़की शोभा','कील' ये तीनों कहानियाँ परिवार से उपेक्षित जवान लड़की की मन:स्थिति को निरूपित करती है।

स्वच्छन्दता और स्वतंत्रता के कारण महानगर में स्त्री-पुरुष के बीच यौनाचार को उत्तेजना मिलती है। **"**अकेलेपन, ऊब आदि से छुटकारा पाने के लिए महानगरवासी ने यौन संबंधों को जीवन के एक अंग के रुप में स्वीकार किया है। पहले तो यौन संबंध में तो कई तरह के प्रतिबन्ध लागे

थे। अब महानगर की भीड़ में एक दूसरे को न पहचान सकने के कारण एवं संयुक्त परिवार के विधटन के कारण व्यक्ति को गोपनीयता मिली है, जिसके फल स्वरूप व्यक्ति के कार्य क्लापो पर प्राथमिक समाज का नियंत्रण नहीं रहता। पहले-पहले प्रेम तो एक पवित्र भावना माना जाता था। लेकिन महानगरों के आकर अब वह मात्र यौन संबंधों के लिए रह गया है।**"38** 'ब्लाटिंग पेपर','सीधी रेखाओं का वृत','गंध' जैसी महीप सिंह की कहानियों में पुरुषों की ओर से उत्पीड़ित नारी की स्थिति को स्थान दिया है।

महानगरों में प्राय: जो अस्थायी से प्रेम सम्बन्ध बन जाते है, वे इसी ऊब को तोड़ने का एक साधन है। जीवन में सब कुछ रोमांचपूर्ण चाहता है। 'गंध' महीप सिंह की कहानी में एक पुरुष अपने लिए रोमांच की खोज करने हेतु वह अपनी पत्नी को धोखा देता है। इस कहानी का नरेश के जीवन के सभी खाने भरे हुए है, फिर भी अपने जीवन से वह ऊब का शिकार बन गया है। अच्छी नौकरी, अच्छी पत्नी, अच्छा घर और छोटा सा प्यारा सा एक बच्चा। पर वह एकरसता और ऊब उसे घेरे हुए है। उसकी महिला मित्र उसके ऊब का कारण पूछती है तो वह अपने खायालो की बातें करता है जो बहुत रोमांचक हो सकते है - **"**कभी ख्याल आता है, दफ्तर से लौटा हूँ ..... देखता हूँ, राज़ी पलंग पर मरी पड़ी है सारा सामान चोरी हो गया है। कभी ख्याल आता है, मैं नौकरी से निकल दिया गया हूँ, और फिर दर-ब-दर की ठोकरें खा रहा हूँ । कभी ख्याल आता है कि मेरा सीरियस एक्सीडेंट हो गया है और में पट्टियों से लिपटा अस्पताल में पड़ा हूँ। बहुत से लोग मुझे देखने आ रहे है।**"39** वह अपनी उस महिला मित्र के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित कर अपनी ऊब को तोड़ना चाहता है। वह उससे कहता है - **"**शायद तुम मेरी इस ऊब को तोड़ सको।**"40** एडवेंचर के जोख़िम से बचते हुए, रोमांच की तलाश

महानगर के मानस का घटक बन चुकी है। महानगर में नारी पुरुष मित्र बनाती है साथ ही साथ उसे यौन शोषण का भोग भी बनना पड़ता है।

महानगर की भीड़ के बीच नारी अपने अस्तित्व को लेकर निरर्थकता का अनुभव करती है। महानगरीय व्यस्तता में नारी एकाधिक परिस्थितियों के बीच संतुलन स्थापित न कर पाने की वजह से मानसिक रूप से रुग्णता अनुभव करती है। 'सन्नाटा' में भाग दौड़ और व्यस्तता की जिन्दगी में माँ -बेटी के रिश्तों में परस्पर उदासीनता और निरपेक्षता मालूम होती है। "कैसी अजीब बात है। हमारे बीच जब तक कोई तीसरा व्यक्ति न आए, हमें यह अहसास ही नही होता कि हम माँ-बेटी है। हमें बस एक-दूसरे के होने का अहसास होता है।"**41** इसमें पात्र अपने अकेलेपन के साथ सहज होकर जी रहे है।

आर्थिक संकट के कारण कभी विरोध, विद्रोह, हताशा, विवशता जैसी कसक भी महीप सिंह ने महानगरीय परिवेश की कहानियों में उल्लेख किया है। गरीबी, महँगाई, बेरोज़गारी, कालाबजारी आदि के बढते प्रभाव से नारी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नही कर पाती है। 'वेतन के पैसे' मध्यमवर्गीय आर्थिक संकट में जूझते उत्पन्न हीन भावना को अभिव्यक्त करती कहानी है। वैसे पारिवारिक आर्थिक संकट का सबसे बुरा प्रभाव गृहिणी को झेलना पड़ता है। "यदि पति कमाकर लाए और उसे अपने पास रखे और जब-तब पत्नी को घर की आवश्यकताओं के लिए कुछ देता रहे तब पत्नी की अवस्था ..... बदतर हो जाती है। जिसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता से भी वह वंचित होती है। सच बात तो यह है कि स्त्री चाहती है कि कमाने का कार्य तो पति करे किन्तु उसे रखने और व्यय करने का संपूर्ण उत्तरदायित्व उसका हो, एकमात्र उसका।"**42** कहानी में गोपाल अपनी पत्नी कमला को घर की आवश्यकताओं की पूर्ति तक भी वेतन के खर्च करने न देते हुए खुद ही सारे पैसे संभालकर रखता है।

जिससे कमला के भीतर अपने पति के प्रति बड़ा नीरसा अनात्मभाव भर जाता है।

महानगरीय में नारी की व्यस्तता को बढ़ाने में तकनीकी, विज्ञान और भौतिकता आगे पड़ती है। महानगर में नारी अधिकाधिक सुविधाएँ जुटाने की कोशिश में जितनी ज्यादा भागदौड़ करती है, उतनी ही समस्याएँ निरन्तर बढती जाती है। नारी की यंत्रवत सक्रियता ने आर्थिक समृद्धि में बढ़ोतरी ज़रुर की है, मगर उससे नारी भीतरी रुप से संत्रस्त हुई है। मूल्यहीन शिक्षा, भौतिक सुविधा, आर्थिक स्पर्धा, संचार माध्यमों, खोखला मनोरंजन आदी महानगरीय पहलुओं ने नारी को मूल्यहास की स्थिति पर लाकर खड़ी कर दी है। महानगरीय मूल्यहास में नारी को घुटन मृत्युबोध, अजनबीपन, निरर्थकता जैसी ग्रस्त कर ली गई है। 'कुछ और कितना' कहानी में यह स्थिति नारी की देखने को मिलती है।

महीप सिंह की रचनाओं में महानगर बोध के वे पहलू बड़ी शिददत के साथ उभरे है जो उपयुक्त मोडो की सीमा रेखाओं पर नुमायाँ होते है। महानगर की जिन्दगी में बाहर और भीतर शोर है और इसलिए जीवन विकास के प्राकृतिक रास्ते यहाँ अस्त-व्यस्त हो गये है। परिणाम हर नारी अपने आप से संतुष्ट तो नही है, वह हर दूसरे पर शक भी करती है। यही वजह है कि इस शोर में भी एकांत ढूंढने की लाचार कोशिश करती है। संयोग से बाहरी शोर कम हो जाता है तो भीतरी शोर शुरू हो जाता है। विवाहेत्तर प्रेम संबंधों का बनना और फिर उनका दोनों पक्षों में से किसी के भी पारिवारिक जीवन में खलेल डाले बिना चलते रहना महानगर को जीवन पघ्घति का सहज अंग सा बनता जा रहा है। अतृप्ति की यातना इस संम्बधों का अविभाज्य अंग होती है। महीप सिंह ने महानगरीय बोध के इन आयाम को 'शोर' कहानी में अभिव्यक्ति दी है। 'शोर' के औरत और मर्द इस सम्बन्ध की यातना को जी रहे है, लेकिन

निश्चित रूप से ये यह भी समझ पा रहे है कि इस यातना में जीते जाना ही उनकी नियति है। जब औरत पूछती है - **"**क्या यह जिन्दगी ऐसे ही गुजरेगी ? "तो मर्द का प्रतिप्रश्न ही उसका स्पष्ट उत्तर है -" यह जिन्दगी और किस तरह गुजर सकती है?**"43** महानगर बोध का यह पक्ष इस कहानी में स्त्री-पुरुष संम्बधों के एक नए और किसी सीमा तक खूबसूरत पहलू को उभारता हो।

'घिरे हुए क्षण' जिसकी मदार शक पर है, उन कहानियों से मेल रखती है जिनमें क़स्बाई और महानगरीय बोध के मूल्यों की टकराहट चित्रित हुई है। वैसे शक की प्रवृत्ति आधुनिक नहीं कही जा सकती क्योंकि बौद्धिक एवं विवेकपूर्ण तटस्थता के अभाव में इसकी पड़ताल संभव नही। लेकिन ये मूल्य महानगर में रहकर भी अभी विकसित नही हो पाये है। विडंबना यह है कि हम महानगर की सुविधाओं का तो लाभ उठाना चाहते है पर उसकी कीमत चुकाने के लिए तैयार नही है। महानगरों में जहाँ पति-पत्नी दोनों कमाते है, वहाँ पत्नी को बहुत से लोगों के सम्पर्क में आना पड़ता है। उसके कही सामान्य कामकाजी तो कहीं गहरे सम्बन्ध विकसित हो जाने की भी संभावनाएँ होती है और वह उसी तरह के झूठ भी बोलती है जैसे अब तक पति बोलते आए है। महानगर में जीते पीते को यह सब समझते हुए भी स्वयं को इस सबको सहज स्वीकार करने की स्थिति में लाना पड़ता है। इस प्रक्रिया में होने वाली तकलीफ़ को झुठलाया नही जा सकता लेकिन इस स्थिति को भी मानसिकता का सहज अंग बनाने की प्रक्रिया महीप सिंह के पात्रों में निरन्तर जारी है। 'घिरे हुए क्षण' का दिलीप जब संदेह के उमड़ते सैलाब के बावजूद मोहिनी को बांहो में भीचता है तो वह यही कर रहा है - **"**आज वह इस उमड़े हुए सैलाब में अपने को डूबने नही देता। मुस्कारती हुई, क्रीम की गंध छोडती हुई मोहिनी आज उसे बहुत ही प्यारी और मादक

लग रही है। वह उसे कसकर भीच लेता है। उसे लगता है उसकी कुर्सी कुर्सी नही है। वह मनु की मत्स्य नौका है जो इस उमड़े हुए सैलाब के थपेडों पर तैरती जा रही है।**"44** महानगरीय परिवेश के बावजूद मन अगर महानगरीय नही हो पाया तो मोहिनी और दिलीप जैसे पति -पत्नी शक से घिरे रहते है।

'घिराव' जैसी कहानी भी उस स्थिति को व्यक्त करती है जहां की चरित्रात्मकता मात्र महानगर का ही परिणाम है। इसलिए यहाँ मानवीयता के रागात्मक अंश के छूट जाने का दुख नही है। उल्टे इनकी पीड़ा दूसरी ही है। महानगर में स्त्री-पुरुषों के रिश्तों के दो पहलू है। पर विडंबना यह कि टूटा हुआ रिश्ता न तो पूरी तरह टूट सकता है न जुड़ा हुआ पूरी तरह जुड़ सकता है। इसलिए तो यहाँ का आदमी गत और अपगत से घिरा हुआ रहता है। सुमी अमर को छोड़कर भी अमर से मुक्त नही हो सकी। और ओमी से जुडकर भी खुद को अजनबी महसूस करती है। परिणाम यह कि यहाँ किसी का टूटना भी सहज नही और जुड़ना भी सहज नही। घिराव यहाँ की नियति है।

महानगर का जीवन व्यक्ति को निरन्तर भौतिक उपलब्धियों की होड़ में लगाए रखता है। परिवार के सभी सदस्य अपने अपने स्तर पर अकेले पड़ते जाते है। जहाँ महीप सिंह की पहले और दूसरे दौर की कहानियाँ के पात्र महानगरीय आत्मकेंद्रितता से उपजने वाले अकेलेपन और अजनबीपन से संत्रस्त दिखाई देते हैं वही बाद की कहानियों के पात्र उसे झेलते हुए उसे अपने जीवन का अंग मानकर उसमें सहज होने का प्रयास कर रहें है। महानगर महीप सिंह की कहानियों के परिवेश और भावबोघ दोनों का ही विभिन्न अंग है बल्कि वही से उनकी कहानियों आकार ग्रहण करती है।

यह सब कहानी में महीप सिंह ने नारी का महानगरीय जीवन व्यक्त क्या है इसके अलावा 'मैडम','कील','झूठ','लोग','सीधी रेखाओं का वृत','कल', 'लय','काल संध्या','माँ' आदि कुछ रचनाएँ है जिनमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से नारी का महानगरीय जीवन का बोध व्यक्त हुआ है। महीप सिंह अपनी जगह खास होते हुए भी नई कहानी से एकदम अलग नही है। महानगर की कहानियाँ की बात करें तो साफ-साफ देखा जा सकता है कि उनकी अक्सर कहानियाँ उसी मुद्वा को लेकर चलती है जिस पर क़स्बाई बोध के छूटने का हल्का विषाद छाया हुआ है। लेकिन आगे की कहानियों जैसे 'उजाले के उल्लू','काला बाप गोरा बाप' में कथ्य के स्तर पर रुकी हुई या पीछे मुडती हुई चरित्रात्मकता को रागात्मकता के खोल से निकालकर जिन्दगी की सच्चाइयों से दो-चार होने की प्रेरणा दिखाई देती है। ये कहानियों नारी के जीवन का बोध कराती है ही साथ ही सचेतन भी है।

*** निष्कर्ष**

अतःमहीप सिंह की कहानी संग्रहों में उन्होंने अपनी कहानियों में नारी के महानगरीय जीवन संदर्भ को अत्यंत ही विस्तृत, विविधता और संजीदगी के साथ उभारा है। नारी के जीवन में महानगरी की कोई भी समस्या या विसंगतियों महीप सिंह की कहानियों से छूट नही पाई। वैसे उनका कहानियों का कथ्य दिल्ली और मुंबई दो ही महानगर के परिवेश पर आधारित है फिर भी उनकी कहानियों में महानगरीय परिवेश का वैविध्य पाया जाना अपने आप में विशेषता मानी जाएगी। उनकी कहानियों में नारी के जीवन में महानगर की चकाचौंध, आर्थिक, विपन्नता, मूल्य विघटन की प्रक्रिया, अकेलेपन में कुंठित पात्रों की विवशता आदि महानगरीय कथ्य का समावेश होता है। महीप सिंह के नारी पात्र महानगरीय विसंगतियों के बीच विवश होते हुए प्रयत्नशील

रहती है। महानगरीय यौनाचार में 'गंध','ब्लाटिंग पेपर','सीधी रेखाओं का वृत', 'शोर', 'घिरे हुए क्षण', 'घिराव' आदी है। देह व्यापार या वेश्यावृति में 'मैडम', 'पेरिश रोड' आदी इस प्रकार महानगरीय समकालीन परिवेश में व्याप्त सभी परिस्थितियों महीप सिंह की कहानियाँ का विषय बनी है। इन सब बातों का उपयुक्त यह है कि महीप सिंह की कहानियों में नारी पात्रों के जीवन में महानगरीय जीवन संदर्भ अंतर्गत किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

(1) डॉ.भगवानदास वर्मा, करक कलेजे माहि, महानगर बोध कहानियों का केन्द्र बिन्दु है - पृ - 197

(2) संपादक, रामचन्द्र वर्मा, संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर - पृ - 516

(3) डॉ.सीमा गुप्ता, समकालीन हिन्दी उपन्यास महानगरीय बोध - पृ - 07

(4) हाट, पाल के एण्ड डलबॅट जे रीस: सिटिज एण्ड सोसायटी द फ्री प्रेस ग्लेनको इल्यास इल्यानस, 1959, भूमिका में से

(5) कालॅ ई.ई.:अरबन सोश्योलोजी :मैक्ग्रा हिल बुक कंपनी न्यूयोर्क, 1955 - पृ - 5,6

(6) डॉ.नरेन्द्र कुमार सिंघी, समाजशास्त्र का विवेचन - पृ - 389

(7) डॉ.सीमा गुप्ता, समकालीन हिन्दी उपन्यास महानगरीय बोध - पृ - 07

(8) तोमर गोवल, नगरीय समाजशास्त्र - पृ - 534

(9) पुष्पपालसिंह, समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भ - पृ - 117

(10) डॉ.रमेश देशमुख, आठवें दशक की हिन्दी कहानी और जीवन मूल्य - पृ - 117

(11) चित्रा मुदगल, 'लिफिफा' - पृ - 22

(12) ममता कालिया, प्रतिदिन काली साड़ी कहानी - पृ - 09

(13) सारिका, पत्रिका, जुलाई, 1974

(14) प्रा.सुभाष मारुती कदम, चित्रा मुदगल के उपन्यासों में महानगरीय बोध - पृ - 51

(15) डॉ.श्यामसुन्दर मिश्र, अस्तित्ववाद और द्वितीय समरोतर हिन्दी साहित्य - पृ - 102

(16) डॉ.नरेन्द्र मोहन, समकालीन हिन्दी कहानी की पहचान - पृ - 49

(17) यादेवेन्द्व शर्मा, हिन्दी कहानी नारी और पत्नी - पृ - 108

(18) मालती जोशी, एक घर सपनों का - पृ - 77

(19) डॉ.रमेश देशमुख, आठवें दशक की कहानी में जीवन मूल्य - पृ - 135

(20) निरुपमा सेंवती, शायद हाँ शायद नही - पृ - 80

(21) गिरिराज किशोर, संपूर्ण कहानियाँ खण्ड 1, गाउन कहानी - पृ - 96

(22) गिरिराज किशोर, संपूर्ण कहानियाँ खण्ड 2, रिश्ता कहानी - पृ - 147

(23) मालती जोशी, वागर्थ अंक - 42, सितम्बर - 98 - पृ - 40

(24) मालती जोशी, मध्यान्तर कहानी, 1979, - पृ - 97

(25) देवेन्द्र इस्सर, साहित्य और आधुनिक युगबोध - पृ - 03

(26) निर्मल वर्मा, परिन्दे - पृ - 143

(27) आशीष सिन्हा, एक एब्सर्ड नाटक - पृ - 60

(28) कथान्तर-सं. डॉ.परमानंद श्रीवास्तव एवं डॉ.गिरिश रस्तोगी - पृ - 67

(29) डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा संसार - पृ - ,35

(30) डॉ.रजनीशकुमार, हिन्दी कहानी के आंदोलन : उपलब्धियाँ और सीमाएँ - पृ - 103

(31) डॉ.महीप सिंह, इक्यावन कहानियाँ, भूमिका (साक्षात्कार) - पृ - 13

(32) वहीं

(33) डॉ.भगवानदास वर्मा, करक कलेजे माहि, महानगर बोध कहानियों का केन्द्र बिन्दु है - पृ - 198

(34) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट - पृ - 34

(35) डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा संसार - पृ - 39

(36) वहीं

(37) डॉ.दीपा हावणीराज मैलारे, साठोत्तरी कहानियों में पुरुष चरित्र - पृ - 23

(38) डॉ.प्रिया नायर, साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास और नगरबोध - पृ - 27

(39) डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा संसार - पृ - 44

(40) वहीं - पृ - 45

(41) डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'सन्नाटा' कहानी - पृ - 15

(42) डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'वेतन के पैसे' कहानी - पृ - 40

(43) डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा संसार - पृ - 40

(44) वहीं